बच्चे स्कूल में रोज़ाना कुछ सीखकर जाएँ

शिक्षिका शगुफ्ता बेग से सिद्धार्थ कुमार जैन की बातचीत

सिद्धार्थ : शगुफ्ता, आपको क्यों लगा कि शिक्षक ही बनना चाहिए, अपने शिक्षकीय सफ़र के बारे में कुछ बताइए।

शगुफ्ता बेग : मेरा 'जुनून' भारतीय सेना में जाने का था। लेकिन कुछ पारिवारिक परिस्थितियाँ ऐसी रहीं कि मैं वहाँ पर नहीं पहुँच सकी। मुझे मेरे स्कूल शिक्षक ने एक बात कही थी कि 'देश सेवा' का मतलब 'रक्षा' में ही जाना नहीं है, अगर आप कुछ ऐसा काम करती हो जिससे समाज में कुछ बदलाव आए, या समाज आपको देखकर प्रोत्साहित हो, वह भी सच्ची देश सेवा ही कहलाएगा।

मैं स्नातक की पढ़ाई के बाद शिक्षण कार्य से जुड़ी। मुझे शिक्षा में कार्य करते हुए 24 साल हो गए हैं। मैं अपने शिक्षकीय सफ़र को एक बेहतरीन अनुभव मानती हूँ। एक अच्छे शिक्षक को एक अच्छा शिक्षार्थी भी होना चाहिए। शिक्षक के लिए हर दिन, हर समय सीखते रहना बेहद ज़रूरी है। शिक्षक को अपने विषय में दक्ष होना चाहिए, लेकिन साथ-ही-साथ उसे शिक्षा और अन्य मुद्दों के बारे में पर्याप्त जानकारी ज़रूर होनी चाहिए। हम एक बच्चे के सर्वांगीण विकास की बात करते हैं तो पहले शिक्षक ख़ुद को भी बच्चों के विकास के लिए सक्षम बनाएँ।

मैंने अपने शिक्षकीय सफ़र की शुरुआत निजी स्कूल से की थी– एक मिडिल स्कूल शिक्षक के रूप में। और मुझे अच्छा लगा मिडिल स्तर पर पढ़ाना। मैं 2021 में शासकीय सेवा में आई। शासकीय सेवा में मेरा अनुभव तीन सालों का ही है। यक़ीन मानिए, यहाँ पढ़ाना चुनौतीपूर्ण है। शासकीय स्कूल में मुख्य रूप से शिक्षक ही अकेला होता है बच्चों को पढ़ाने के लिए। मैंने एक साल बैरसिया ब्लॉक के बेहद अन्दर बसे बागसी हाई स्कूल में पढ़ाया है। अभी शासकीय हायर सेकेण्डरी स्कूल में पढ़ाते हुए डेढ़ साल ही हुआ है।

सिद्धार्थ : अपने काम के दौरान ऐसी कौन-सी बातें हैं जो आपको अपना काम अच्छे से करने के किए प्रेरित करती हैं?

शगुफ्ता बेग : अच्छे काम करने का श्रेय मैं अपने स्कूल के शिक्षकों को देना चाहूँगी। गणित विषय पढ़ाने वाली पिल्लई मैडम और अँग्रेज़ी पढ़ाने वाले शिक्षक लालजी सर थे। ये दोनों शिक्षक इतने जुनूनी थे कि उनको देखकर मुझे लगता था कि शिक्षक हों तो ऐसे। आज मैं स्वयं शिक्षक हूँ, और मेरा व्यक्तित्व, साथ ही बच्चों को पढ़ाने का तरीक़ा, आदि उन शिक्षकों का ही प्रतिबिम्ब है। मैंने उनसे जुझारूपन सीखा है। मेरे लिए मेरे रोल मॉडल गणित व अँग्रेज़ी के शिक्षक रहे हैं। ये भी सही है कि यदि आप शिक्षकों से प्यार करते हैं तो चयनित विषय से भी प्यार करेंगे। इसलिए विषय भी मैंने वही लिया, जो आज मैं पढ़ाती हूँ।

सिद्धार्थ : बच्चों के साथ शिक्षण प्रक्रियाओं को बेहतर ढंग से आगे बढ़ाने के लिए कक्षा में जाने के पहले आप किस तरह की तैयारी करती हैं?

शगुफ्ता बेग : मुझे यहाँ आकर महसूस हुआ कि बच्चों में गणित शिक्षण का डर बैठा हुआ है। बच्चों के दिलो-दिमाग़ से गणित का भय निकालना मेरी प्राथमिकता बन गई। गणित कोई अमूर्त चीज़ नहीं है। इसलिए हमने स्कूल में गणित दिवसों के आयोजनों से इसकी शुरुआत की। गणित दिवसों के दौरान हमने बच्चों के साथ काम किया, और समझाया कि आप जो काम कर रहे हैं उसे अपने रोज़मर्रा के जीवन से जोड़कर देख सकते हैं। जैसे– विभिन्न प्रकार की आकृतियाँ हैं, इनको मिलाकर एक बेहतर आकृति बनाकर प्रस्तुत कर सकते हैं, आदि। बच्चों ने भी इसको बेहद सकारात्मक रूप से लिया, और धीरे-धीरे उनकी रुचि गणित में पैदा हुई। उनमें विश्वास जागा कि वे भी गणित में कुछ कर सकते हैं। हमने अलग-अलग मॉडल बनाए, इन सबके साथ गणित को उनके दैनिक जीवन से जोड़ने की कोशिशें कीं। ऐसे प्रयास लगातार किए ताकि बच्चों के मन से गणित का डर दूर हो। अब मेरी कक्षा में बच्चों का गणित के प्रति डर काफ़ी हद तक दूर हुआ है।

कक्षा में जाने के पहले मैं ख़ुद की तैयारी के लिए बच्चों का पूर्व आकलन और उनके स्तर को समझने की कोशिश करती हूँ। फिर इस सबके आधार पर शिक्षण कार्य करने की तैयारी करके कक्षा में जाती हूँ। मेरा मानना है कि सभी बच्चे एक जैसे नहीं होते, सबकी सीखने की क्षमता अलग-अलग होती है। इसलिए बच्चों के स्तरानुकूल समूहों का निर्माण किया जाता है। इससे बच्चों को समान स्तर पर लाने की कोशिश की जाती है। शुरुआत में बच्चों के साथ उन अवधारणाओं से जुड़े शिक्षण कार्य को प्रमुखता से किया जाता है जो उनके समझ के स्तर की होती हैं। बच्चों के स्तर को जानने के लिए कक्षानुरूप गणित की वर्कशीट तैयार करती हूँ जिसमें कुछ मौखिक, गतिविधि-आधारित व लिखित सवाल होते हैं। बच्चों के समूहों के

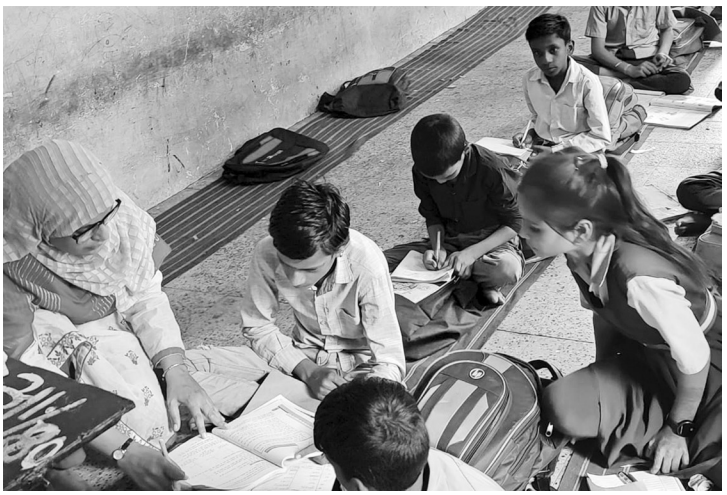

आधार पर शैक्षिक कार्यों को लागू करने के लिए उनपर ज़्यादा ध्यान देती हूँ।

मैं यह योजना भी बनाती हूँ कि जो भी अवधारणाएँ बच्चों को सिखाई जानी हैं, उनको किस तरह सिखाया जाए ताकि अलग-अलग समूह के बच्चों की बुनियादी समझ विकसित हो पाए। मैं इसके लिए कुछ आवश्यक टीएलएम भी तैयार करती हूँ। जैसे– जब हम ठोस आकार की वस्तुओं की बात करते हैं। 2डी, 3डी क्या होता है, इसे समझने में उन्हें मुश्किलें आती हैं। ऐसी मुश्किलें बच्चों को पेश न आएँ इसके लिए हम पहले से ही कुछ सवाल तैयार करते हैं।

शिक्षक के लिए ज़रूरी है कि पहले वह ख़ुद उन अवधारणाओं को समझे जिन्हें पढ़ाया जाना है। कक्षा शिक्षण के लिए चयनित अवधारणा से सम्बन्धित अधिगम प्रतिफल की मैपिंग की जाती है। इसके बाद हम कक्षा शिक्षण की योजना बनाते हैं। शिक्षण योजना पर काम करने के पहले बच्चों के साथ बेहतर रिश्ते बनें, इसके लिए कुछ गतिविधियाँ करते हैं। फिर सम्बन्धित अवधारणाओं के टीएलएम तैयार किए जाते हैं। मैं स्कूल में उपलब्ध टेबलेट का इस्तेमाल अवधारणाओं से सम्बन्धित वीडियो क्लिप, लिंक, आदि दिखाने के लिए करती हूँ। बच्चों को समझाने के बाद कुछ सवाल भी हमारे पास होने चाहिए ताकि हम बच्चों का आकलन कर पाएँ।

कक्षा में जाने के पहले मैं कक्षा का वातावरण तैयार करने की कोशिश करती हूँ जिससे बच्चे मेरी बातों को ध्यान से सुन सकें। उसके लिए मैं कक्षा में बच्चों से उनमें रुचि पैदा करने वाले सवाल पूछती हूँ। उन्हें कुछ ऐसी आकर्षक चीज़ें दिखाती हूँ ताकि उनका ध्यान शिक्षक की तरफ़ हो। कुछ वीडियो क्लिप दिखाकर भी बच्चों का ध्यान पढ़ाई की ओर आकर्षित किया जा सकता है।

सिद्धार्थ : अपने शिक्षकीय अनुभव से अध्यापन की जो ख़ास बातें आपको समझ में आईं, उन्हें साझा कर सकेंगी?

शगुफ्ता बेग : बच्चों में सीखने की ललक होती है। हर बच्चा सीखना चाहता है। भले ही बच्चा किसी भी स्तर का क्यों न हो। शिक्षक की ज़िम्मेदारी है बच्चों को सिखाना। इसके लिए शिक्षक को अपनी शिक्षण प्रक्रियाओं में बदलाव करना भी ज़रूरी है। कुछ हद तक, मैंने भी शिक्षण प्रक्रियाओं में बदलाव करने के प्रयास किए हैं।

कक्षा में शिक्षण कार्य के पहले शिक्षक को बच्चों को समझने की ज़रूरत है। बच्चों के साथ आपके आत्मीय रिश्ते होते हैं तो उनका ध्यान भी शिक्षण पर ज़्यादा होता है। बच्चों को सीखना है तो उन्हें शिक्षक भी रुचिकर, यानी उनसे जुड़ने वाला लगना चाहिए। मेरा अनुभव रहा कि मैं पहले बच्चों से जुड़ी, उनसे बातें कीं, उनकी पारिवारिक व सामाजिक पृष्ठभूमि को जाना, उनकी रुचियाँ क्या हैं, वे क्या चाहते हैं, उन्हें क्या चीज़ें पसन्द हैं, उनको कौन-से खेल अच्छे लगते हैं, उनके जीवन की छोटी-छोटी पसन्द-नापसन्द क्या रही हैं

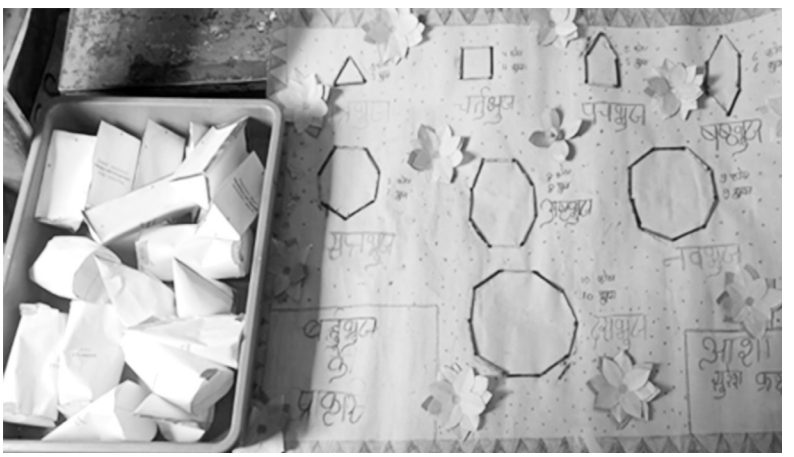

उन्हें समझने की कोशिश करती हूँ। एक अनुभव मुझे याद आ रहा है। स्कूल में एक सांस्कृतिक कार्यक्रम चल रहा था। एक बच्चे ने मुझसे पूछा, "मैडम, आपने जो कान में बड़े-बड़े ईयर रिंग पहने हैं, इनमें गणित कहाँ पर है?" ये बात मुझे भी क्लिक कर गई कि जितना हो सके, आप बच्चों की हरेक चीज़ों को, बातों को अपने विषय से जोड़ने की कोशिश करें। मेरा हमेशा यह प्रयास होता है कि हम भोजनावकाश में बच्चों के साथ बैठें। बच्चे टिफ़िन में क्या लेकर आए हैं; किसने खाना बनाया है; खाने में उन्हें क्या पसन्द है; कौन-कौन-सी सब्ज़ियाँ उन्हें अच्छी लगती हैं; आदि सवालों के ज़रिए मैं अनौपचारिक माहौल में बच्चों के साथ बातचीत करती हूँ। इस तरह, जब मैं बच्चों के साथ शिक्षण प्रक्रियाओं पर बात करती हूँ तब बच्चों का भी जुड़ाव महसूस करती हूँ। इससे बच्चों की अधिक-से-अधिक सहभागिता देखने को मिलती है।

अच्छे माहौल की बात है तो बच्चों को माहौल देने के लिए हम केवल पढ़ाई की ही बातें नहीं करते बल्कि उन्हें स्कूल की दिनचर्या में अलग-अलग रचनात्मक गतिविधियों, खेल स्पर्धा, बालरंग, आदि में शामिल करते हैं। इसके लिए हम शनिवार की बालसभा का इन्तज़ार नहीं करते।

सिद्धार्थ : शिक्षक और बच्चों के रिश्ते, स्कूल का माहौल, आदि महत्त्वपूर्ण प्रक्रियाएँ शिक्षण का अहम हिस्सा होती हैं। आप इन पहलुओं को कैसे देखती हैं?

शगुफ्ता बेग : जैसा मैंने पहले भी कहा कि शिक्षण में सबसे ज़्यादा ज़रूरी है एक शिक्षक और बच्चे के बीच आत्मीय सम्बन्ध होना। ये सम्बन्ध ही बच्चे को स्कूल आने के लिए प्रेरित करते हैं। यहाँ पर बच्चों के ड्रॉपआउट की जो समस्या है, वह कम होते देखने को मिली है।

दूसरी बात, जहाँ तक स्कूल के माहौल की बात है, बच्चों को माहौल देने के लिए हम केवल पढ़ाई की ही बातें नहीं करते बल्कि उन्हें स्कूल की दिनचर्या में अलग-अलग रचनात्मक गतिविधियों, खेल स्पर्धा, बालरंग, आदि में शामिल करते हैं। इसके लिए हम शनिवार की बालसभा का इन्तज़ार नहीं करते। हर वक़्त कक्षा में माहौल को ख़ुशनुमा बनाने की ज़रूरत होती है। बच्चों के साथ आपके सम्बन्ध अच्छे रहेंगे तो वे अपने दिल की बातें आपसे साझा कर पाते हैं। वे कभी माँग भी करते हैं कि मैडम, आज पढ़ने का मन नहीं है, बाहर खेलना है तो हमें उनके अनुसार भी निर्णय लेना होता है।

मैंने कक्षा के बाहर की दुनिया को समझने का प्रयास किया है। यहाँ पर परिधि पढ़ाने के लिए एक मॉडल है। इसका इस्तेमाल कक्षा के बाहर होता है। बच्चों के लिए यह एक खिलौना है। उनको पता है कि शिक्षक हमको इस मॉडल को पकड़ने, छूने की स्वतंत्रता देंगे। इससे बच्चों को एक अलग ही अनुभव मिलता है। दूसरे बच्चे भी सीखने के लिए सजग होते हैं। मुझे लगता है कि छोटी-छोटी चीज़ों से शिक्षक माहौल बना सकते हैं। इसके अलावा, शैक्षिक भ्रमण भी बच्चों को नए अनुभव देता है। स्कूल खुलने पर हम बच्चों को गाँवों में लेकर जाते हैं, और दूसरे बच्चों को स्कूल में आने के लिए प्रेरित करते हैं।

सिद्धार्थ: आपने विद्यालय में गणित शिक्षण को लेकर काम किया है। इस बारे में आपकी क्या सोच-समझ, तैयारी और अनुभव रहे?

शगुफ्ता बेग : गणित शिक्षण के काम की तैयारी के लिए मैंने अमूर्त वस्तुओं को मूर्त रूप में लाने के लिए शिक्षण सहायक सामग्री तैयार करने पर काम किया। गणित की 2डी, 3डी जैसी विविध अवधारणाओं पर मॉडलों के माध्यम से बच्चों को काम करवाए। परिधि की अवधारणा सिखाने के लिए एक मॉडल बनाया जो बच्चों को खिलौना भी लगे, और उनकी समझ को भी बढ़ाए। उदाहरण के लिए, मैंने कक्षा में साइकिल के एक छोटे पहिए के रूप में मॉडल बनाया।

कक्षा में बच्चों से प्रयोग कराया, और कुछ सवाल भी किए कि इस पहिए को चलाकर बताओ कि ये कितना घुमा है; यहाँ पर उसकी त्रिज्या क्या है; आदि। यहाँ पर पहिए की तानें उसकी 'त्रिज्या' है, और बीच में जहाँ पहिया जुड़ा हुआ है वह उसका 'केन्द्र' है, और जो पूरा पहिया घूम रहा है, और जो दूरी तय कर रहा है, वह उसकी 'परिधि' है। इस तरह मॉडल से बच्चे जल्दी समझ रहे होते हैं। मुझे लगता है कि हर शिक्षक अपने विषय में इस तरह के प्रयास करेंगे तो निश्चित ही बच्चे को समझाने में आसानी होगी।

मेरी कोशिश रहती है कि पाठ्यपुस्तक में दी गई अवधारणाओं के अनुरूप बच्चों के आकलन के लिए वर्कशीट का भी इस्तेमाल करूँ। आकलन की प्रक्रिया को मैं नियमित रूप से करती रहती हूँ ताकि मुझे यह जानकारी मिल सके कि कक्षा में कौन-से बच्चे किन अवधारणाओं को सीखने में दिक़्क़त महसूस कर रहे हैं। ऐसे बच्चों के साथ मैं विशेष तौर पर ध्यान देकर काम करती हूँ।

सिद्धार्थ : शैक्षिक संवादों के दौरान आपने गणितीय अवधारणाओं पर किए गए अपने काम को बेहतर तरीक़े से शिक्षक समूह के साथ साझा किया था। आप यह कैसे कर पाईं, इस बारे में कुछ बताएँ?

शगुफ्ता बेग : ज़िले में हर माह शैक्षिक संवादों के आयोजन बीआरसी व अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के सहयोग से होते रहे हैं। शैक्षिक संवाद मेरे लिए सीखने का नया मंच रहे हैं। इन संवादों में गणित की हर अवधारणा पर बारीक़ी से बात की जाती है, और अवधारणा की गहराई में जाकर उसे समझाने का प्रयास होता है। मसलन, मैं भिन्न को समझने और समझाने का एक उदाहरण रखती हूँ। मैं अपनी बात कहूँ तो हम कक्षा में भिन्न समझाने के लिए कुछ सामग्री लेकर जाते थे, और उस सामग्री के माध्यम से इस अवधारणा को समझाते थे। लेकिन शैक्षिक संवाद में यह बताया गया कि भिन्न जैसी अवधारणा को बच्चों को कैसे समझाया जा सकता है। इसके लिए हमें 'भिन्न पट्टी' पर काम कराया गया, और इसके अनुप्रयोग पर चर्चा की गई। हमें समझ में आया कि इस तरह से बच्चों को सिखाएँ तो बेहतर होगा। हमने कक्षा में भिन्न पट्टी के प्रिंट निकलवाकर बच्चों से रंग करवाए। इसके अलावा चार खाने वाली कॉपी में बच्चों के नाम के पहले अक्षर पर रंग भरवाए। मुझे धनात्मक और ऋणात्मक पूर्णांकों वाली अवधारणाओं पर काम करने में काफ़ी मदद मिली। यहाँ हर महीने मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला।

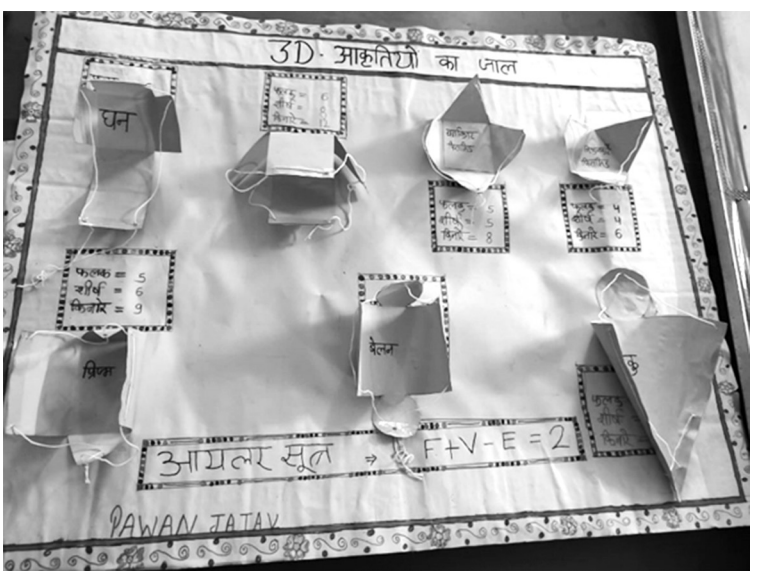

जब मैं स्कूल से शैक्षिक संवाद में जाती थी तो बच्चे अगले दिन पूछते, "मैडम, आपका किस तरह का प्रशिक्षण हुआ? आपको प्रशिक्षण की क्या ज़रूरत है?" मैं बच्चों को ईमानदारी से बताती हूँ कि आपको किस तरह बेहतर पढ़ाना है, जो अवधारणाएँ हैं उन्हें किस तरह

समझाना है, प्रशिक्षण में हमें यही सब सिखाया जाता है। इस तरह की बातचीत से बच्चों को भी प्रोत्साहन मिलता है, और उनकी सीखने की ललक बढ़ती हुई देखने को मिलती है।

दूसरा, शैक्षिक संवादों में शिक्षक बिरादरी के साथ एक दूसरे से सीखने के मौक़े भी मिले। इससे हुआ ये कि जहाँ मुझे दिक़्क़त आ रही थी लेकिन मैं बोल नहीं पा रही थी, ऐसे में दूसरे शिक्षकों ने उन मुद्दों पर चर्चा की। इससे मेरी समझ में भी इज़ाफ़ा हुआ। इससे हमें भी समाधान मिले, और जानकारी मिल पाई कि दूसरे शिक्षकों ने उस अवधारणा को किस तरह पढ़ाया क्योंकि गणित की समस्याओं के हल करने के एक से ज़्यादा तरीक़े होते हैं।

सिद्धार्थ : आप मानती हैं कि बच्चों को सवाल पूछने के भरपूर मौक़े देना शिक्षण प्रकिया का अहम हिस्सा है। इसके लिए आप शिक्षण के दौरान क्या करती हैं?

शगुफ्ता बेग : ये बात बिलकुल सही है। जैसा कि मैंने पहले भी कहा, शुरू से ही मेरा प्रयास रहा है कि पहले बच्चों के मन से गणित का डर हटा पाऊँ, और बच्चे सवाल कर पाएँ। इसके लिए मैंने कक्षा में एक प्रक्रिया निर्धारित की है। बच्चे शिक्षक से सीधे सवाल करने में झिझकते हैं। मैंने बच्चों की झिझक दूर करने के लिए समूहों का निर्माण किया। मैं समूह में बच्चों से सवाल करने को कहती हूँ। पहले सामान्य सवाल लेने को कहती हूँ कि यदि आप कभी किसी का इंटरव्यू करते हैं तब कैसे सवाल पूछेंगे। बस, यहीं से बच्चे का सोचना शुरू हो जाता है।

इसके अलावा, सवाल करने के मौक़े देने के लिए मैं पहले एक-एक से चर्चा न करके सीधे बच्चों से सवाल करवाती हूँ कि आप आपस में बातचीत करें। इसके लिए विषय दे देती हूँ। फिर मैं पूछती हूँ कि आपने बाक़ी बच्चों से क्या सवाल किया, और आपने क्या जवाब दिया। साथ ही, ऐसे ही दूसरे सवाल बनाओ, और पूछो।

इस तरह की प्रक्रिया से बच्चे स्वतंत्र महसूस करते हैं और बोलना सीखते हैं। फिर हम उनसे सवाल करते हैं। यहाँ पर पूछना गौण है। मुख्य बात यह है कि बच्चा बोले। जब बोलने का माहौल मिल पाएगा, बच्चा तरह-तरह के सवाल पूछ पाएगा। इसके लिए एक जुड़ाव शिक्षक और बच्चों का बेहतर सम्बन्ध है। बच्चे अपने दोस्तों से मुक्त भाव से सवाल पूछ सकते हैं, जबकि शिक्षक से नहीं पूछ पाते। इस तरह, साथ-साथ सीखने (पीयर लर्निंग) की बात आ जाती है। पहले बच्चों ने आपस में सवाल करना शुरू किया, अब वे मुझसे सवाल करते हैं।

इसके बाद बच्चों को कुछ और मौक़े भी दिए जाते हैं। उन्हें शिक्षक की जगह पर रखा जाता है, और बच्चों की तरह मैं बैठती हूँ। मैं उनसे कहती हूँ कि अब आप हमसे पूछो। ये भले ही सारे बच्चे नहीं कर पाएँ, लेकिन वे सोचने की प्रक्रिया में आगे बढ़ ही पाते हैं। मुझे इस बात का सुकून है कि मेरी कक्षा के ज़्यादातर बच्चे सवाल पूछते हैं। हमारे स्कूल में कक्षा 6, 7 व 8 में लगभग 150 बच्चे अध्ययनरत हैं।

सिद्धार्थ : आमतौर पर शिक्षकों का कहना होता है कि स्कूलों में शैक्षिक कार्य के अलावा दूसरों कार्यों में भी संलग्नता होने से शिक्षकीय कार्य प्रभावित होता है। आपको क्या लगता है?

शगुफ्ता बेग : यह सही है। शासकीय शिक्षक को पढ़ाने के अलावा दूसरे सरकारी कामों में लगाया जाता है। लेकिन एक बेहतर शिक्षक इन दोनों में सन्तुलन बना सकता है। ये शिक्षक की इच्छा शक्ति पर निर्भर करता है। शिक्षकों के आवासीय कैम्प के दौरान का एक अनुभव रखना चाहती हूँ। मैं एक शिक्षक की कार्य प्रणाली, और उनके स्कूल की उपलब्धियों से बहुत प्रभावित हुई थी। मैंने उनसे जानना चाहा कि वे स्कूल के शिक्षण के अतिरिक्त, मसलन मध्याह्न भोजन की गुणवत्ता सुधारना, स्कूली रिपोर्ट, दस्तावेज़ों की तैयारी, आदि कार्य साथ-साथ कैसे कर पाते हैं? उनका जवाब था कि प्राथमिकता हमें तय करनी होती है। काग़ज़ी कार्यवाही को स्थगित करके रोज़ कक्षा में जाकर बच्चों के साथ काम करें। बच्चा स्कूल आया है तो रोज़ाना कुछ सीखकर जाए, इसका ध्यान रखना बहुत ज़रूरी होता है। उन शिक्षक के केन्द्र में बच्चों का शिक्षण ज़्यादा ज़रूरी रहा है जिससे उनके कार्य करने की प्रणाली का फ़ोकस स्पष्ट होता है। शैक्षिक कार्य के अलावा दूसरे कार्यों में संलग्नता के लिए समय-सीमा का पालन करने की ज़रूरत होती है। बीएलओ की ड्यूटी के बावजूद शिक्षक अपने शिक्षकीय कार्य को ईमानदारी से कर सकता है, लेकिन यह जज़्बा शिक्षक में होना चाहिए।

सिद्धार्थ : शैक्षिक यात्रा में किस तरह की चुनौतियाँ आईं; और सामना करते हुए आगे का रास्ता आपने किस तरह तय किया?

शगुफ्ता बेग : छोटे बच्चों को गणित शिक्षण का कार्य करना मेरे लिए सबसे बड़ी चुनौती है। मुझे इसका कारण गणित विषय का पूरी तरह से भाषा पर निर्भर होना लगता है। वैसे यह सही भी है क्योंकि भाषा के बग़ैर आप किसी विषय को नहीं सीख सकते। जब हम प्राथमिक कक्षाओं में थे तब किताबों में गणित के सवाल अंकों, चित्रों या चिह्नों से पूछे जाते थे। अगर बच्चा भाषा नहीं पढ़ पाता था तो अंक पहचान लेता था, और जोड़ या घटाव को देखकर समझ जाता था कि क्या करना है। लेकिन आज कक्षा 1-2 की गणित की किताब देखें। यह पूरी तरह भाषा पर निर्भर है। आश्चर्यजनक रूप से कक्षा 1-2 की हिन्दी किताब में उचित शब्दों-वाक्यों का इस्तेमाल हुआ है। आप ख़ुद सोचिए, जो बच्चा पूरी तरह से वर्णमाला नहीं जानता, वह हिन्दी की किताब पढ़ पाएगा? और जब भाषा ही नहीं आती तब गणित पढ़ने पर दोहरा दबाव, एक भाषा का और दूसरा गणित की अवधारणा का, होता है। इसके लिए मैं भाषा पढ़ा-लिखाकर देखती हूँ कि बच्चे का भाषा स्तर क्या है। जब बच्चा सवाल पढ़ेगा तब ही वह सवाल को भी हल कर पाएगा, ख़ासतौर पर इबारती सवालों को। फ़िलहाल मेरी चुनौती यही है कि कैसे मैं दो मोर्चों पर संघर्ष कर पाऊँ।

सिद्धार्थ : अपनी कक्षा के बच्चों का शैक्षिक स्तर सीखने के प्रतिफलों के अनुरूप पाने के लिए आपके क्या प्रयास रहे हैं?

शगुफ्ता बेग : मुझे लगता है कि सीखने के प्रतिफलों के बारे में शिक्षक की स्पष्ट समझ होना

ज़रूरी है। वैसे भी गणित विषय से जुड़ी कक्षावार सभी अवधारणाओं के सीखने के प्रतिफल होते हैं। इन प्रतिफलों के माध्यम से हमें यह तय कर पाने में मदद मिलती है कि बच्चों को किस स्तर तक पहुँचाना है; इन प्रतिफलों को हासिल करने के लिए कक्षा में शैक्षिक प्रक्रियाएँ क्या होंगी; फिर शैक्षिक प्रक्रियाओं को कक्षा में करने के लिए पाठ योजना क्या होगी; किस तरह का टीएलएम होगा; शिक्षण के चरण क्या होंगे; पूर्व और पश्चात आकलन की प्रक्रिया क्या होगी; आदि। पूर्व आकलन कर बच्चों की समझ को समझने की कोशिश की जाती है, और उसके अनुरूप शिक्षण योजना बनाकर शिक्षण किया जाता है। कोशिश रहती है कि अवधारणाओं को अमूर्त न बनाते हुए ठोस रूप में टीएलएम के माध्यम से प्रस्तुत किया जाए। इसके साथ ही, अवधारणाओं को पिछली और अगली कक्षा की अवधारणा से जोड़ा जाता है, जिससे बच्चे को विषय नया नहीं लगे। विषय पढ़ा हुआ-सा, जाना हुआ-सा महसूस हो, और बच्चा रुचि लेकर उस विषय को समझे। जहाँ भी ज़रूरत महसूस होती है, हम वर्कशीट का इस्तेमाल करते हैं। इससे पढ़ाने के साथ-साथ बच्चों के स्तर का आकलन भी होता रहता है, और शिक्षक को भी दिशा मिलती रहती है। इस सब प्रकार से हम सीखने के प्रतिफलों को हासिल करने हेतु सतत प्रयास करते रहते हैं।

सिद्धार्थ : एक शिक्षक के तौर पर आप अपने शिक्षण कार्य में किन बातों को सबसे महत्त्वपूर्ण समझती हैं?

शगुफ्ता बेग : किसी शिक्षक के लिए शिक्षण हेतु सबसे ज़रूरी है अपने विषय की समग्र समझ होना। माध्यमिक स्कूल के शिक्षक को उच्चतर माध्यमिक स्तर की समझ होनी चाहिए। इससे शिक्षक को अपने उद्देश्यों और लक्ष्यों को तय करने, और उन्हें हासिल करने में मदद मिलती है। इसके बाद विषय से जुड़ी अवधारणाओं को बच्चों को किस विधि या टीएलएम से समझाया जाना है, इसकी स्पष्टता होना ज़रूरी है। बच्चों में रचनात्मकता का विकास बेहद आवश्यक है। दूसरा, शिक्षक द्वारा सिखाई गई अवधारणा से क्या बच्चा ख़ुद समझकर उसे अपने ढंग से प्रस्तुत कर पा रहा है, और उसकी रचनात्मकता प्रदर्शित हो रही है? सीखने की वर्गीकरण प्रणाली का मॉडल भी सीखने के उद्देश्यों की जटिलता को अलग-अलग स्तरों पर वर्गीकृत करता है– बुनियादी ज्ञान और समझ से लेकर मूल्यांकन और सृजन तक। इस प्रणाली के मायने समझते हुए बच्चों की अवधारणाओं को ज्ञान से रचनात्मकता के स्तर तक ले जाना ही शिक्षण कार्य में महत्त्वपूर्ण है।

सुश्री शगुफ्ता बेग शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, पडरिया काठी, फंदा ग्रामीण, भोपाल में शिक्षिका के रूप में पदस्थ हैं। वे पिछले 24 सालों से अध्यापन के पेशे से जुड़ी हैं। उनकी गणित शिक्षण व बच्चों के साथ लगातार काम करने में गहरी रुचि रही है। वे अपने स्कूल में नए प्रयोग करती रहती हैं, और वहाँ सीखने-सिखाने का सक्रिय माहौल बना पाई हैं।

सम्पर्क : shagufta612baig@gmail.com

सिद्धार्थ कुमार जैन विगत तीन दशक से सामाजिक एवं अनौपचारिक / औपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में सतत सक्रिय हैं। समाज कार्य, जनसंचार एवं भाषा अध्ययन की पढ़ाई की है। अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, भोपाल (मध्यप्रदेश) में सन् 2013 से कार्यरत हैं। इससे पहले आप दो दशक तक राज्य शिक्षा केन्द्र, मध्य प्रदेश एवं जन शिक्षण संस्थान, उज्जैन से जुड़े रहे। साहित्य निर्माण, शिक्षण-प्रशिक्षण सामग्री निर्माण, व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में आपका विशेष योगदान रहा है। नियमित तौर पर शिक्षा, पर्यावरण एवं सामाजिक पहलुओं पर देश के विभिन्न अख़बारों / पत्रिकाओं में लिखते रहते हैं।

सम्पर्क : siddharth.jain@azimpremjifoundation.org